www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

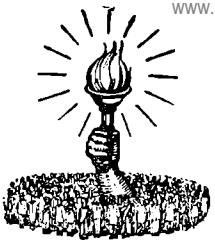

हिमालय की ऋषि परंपरा का अभिनव-संस्करण

शान्ति कुञ्ज

डा० प्रणव पण्ड्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI KAILASH MAHAJAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हिमालय की ऋषि परम्परा का अभिनव—संस्करण शान्तिकुञ्ज

संसार की सुव्यवस्था बनाये रहने और प्रगति प्रेरणा देते रहने का काम ऋषिकल्प आत्माओं का है। वे समय-समय पर सामयिक समस्याओं का समाधान करते और कराते हैं। मनुष्यों की दुर्बल चेतना प्रायः भटकाव की ओर चल पड़ती है। अपने स्वरूप, उद्देश्य और कर्तव्य को भुलाकर, वह करने लगती है, जो उसके लिए हर दृष्टि से अयोग्य है। इस अवांछनीयता का संशोधन और परिष्कार कर सकने की सामर्थ्य अर्जित करने के लिए ऋषि वर्ग के लोग अपनी पवित्रता और प्रखरता बनाये रखने—लोक प्रवाह को मोड़ने तथा व्यक्तित्वों को निखारने, उभारने में सफल होते थे। बढ़ती हुई आवश्यकताओं को दृष्टि में रखते हुए अभिनव अनुष्ठान करते रहते थे।

इन प्रयासों में संलग्न रहने के लिए उन्हें हिमालय का वातावरण सर्वोत्तम लगा। अधोगामी प्रवृत्तियाँ प्रायः पृथ्वी की नीची सतह पर रहती हैं। इसलिए उस क्षेत्र की गणना अधोलोक में की जाती है। ऊँचे स्थान न केवल ऊँचाई की दृष्टि से श्रेष्ठ वातावरण वाले होते हैं, वरन् उनमें आदर्शवादी उत्कृष्टता भी रहती है। हिमालय का हृदय कहे जाने वाले उत्तराखण्ड के साथ वातावरण की सात्विकता का विशेष महत्व है। नागपुरी संतरे, भुसावली केले, मलीहाबादी आमों एवं लखनऊ के अमरूदों की अपनी विशेषता उस स्थान विशेष के कारण है। मलयागिरि चन्दन और किसी स्थान पर इतनी सुगन्धि वाला एवं विशिष्ट नहीं उत्पन्न किया जा सकता। उत्तराखण्ड की अपनी विशेषता उस दिव्य वातावरण के कारण है, जो हमेशा से दैवी प्रेरणा का उद्गम केन्द्र रहा है। ब्रह्म कमल, देव कन्द, संजीवनी बूटी और अन्य दिव्य औषधियाँ और कहीं पाई नहीं जाती। इसका कारण इस क्षेत्र का विशेष वातावरण है। अवतारों ऋषियों की कार्यस्थली होने तथा सूक्ष्म जगत् के सतत आत्मिक विभूतियों से स्पन्दित होते रहने के कारण इस क्षेत्र का अपना महत्व है।

हिमालय के साथ भूतकालीन इतिहास भी जुड़ा हुआ है। चिर अतीत में देवताओं का निवास यहीं था और ऐतिहासिक स्वर्ग इसी क्षेत्र में है। ऋषि परंपरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में तप साधना से लेकर लोक कल्याण की अनेकानेक योजना बनाने तक का कार्य यहीं होता था। ऋषियों के आश्रम और प्रयोगशालाएं इसी क्षेत्र में थीं। अलग होते हुए भी वे इतनी दूरी पर थीं कि एक दूसरे से परामर्श करने में आवागमन सम्बन्धी अत्यधिक कठिनाई अनुभव न करें।

उत्तराखण्ड को हिमालय का हृदय माना जाता है। इस क्षेत्र को देवात्मा भी कहते हैं। सर्व साधारण को इस क्षेत्र के सम्पर्क में आकर अद्‌भुत प्रेरणाओं का लाभ उठाने के लिए कई तीर्थ देवालय भी यहाँ बने हैं, पर मुख्यतया इन्हीं के इर्द-गिर्द गुफाओं, सघन वनों की झोपड़ियों में ऋषियों के स्थान भी थे, जहाँ वे वैज्ञानिक आविष्कारों की तरह अपने क्रिया-कलाप निर्विघ्न रूप से चलाते रहते थे। इस प्रकार ऋषि परंपरा न केवल भारत भूमि का वरन् समस्त संसार का श्रेय-साधन करती थी। निराकार भगवान के साकार प्रतिनिधि की—सन्देश वाहक की—भूमिका प्रायः इन्हीं द्वारा सम्पन्न होती थी। जन कल्याण के सामयिक निर्धारण यहीं होते थे और उन्हें परिव्राजक–पुरोहितों द्वारा विश्वव्यापी बनाने की योजना भी इसी क्षेत्र में बनती थी।

समय की विडम्बना ने ऋषि परम्परा को एक प्रकार से अस्त-व्यस्त कर दिया। साधु-बाबा जहाँ-तहाँ गाँजा फूंकने और भ्रम जंजालों में सर्व साधारण को फँसाकर इनका शोषण करते देखे जाते हैं। ऋषि परम्परा की अस्त-व्यस्तता का ही दुष्परिणाम है कि भारत-भूमि 'स्वर्गादपि गरीयसी' नहीं रही और उसकी गरिमा मणिविहीन सर्प की तरह निस्तेज हो रही है। मध्यकाल का दुष्प्रवृत्तियों से भरा हुआ अन्धकार युग इसीलिए आया कि सूर्य, चन्द्र जैसी चमकने वाली ऋषि परम्परा पर ग्रहण लग गया और हमारी गतिविधियाँ उस स्तर की न रहीं, जिन्हें देखकर विश्व-वसुधा को, भारत को जगद्‌गुरु मानना पड़ता और यहाँ के निवासी तैंतीस कोटि देवता माने जाते।

महर्षि व्यास ने धर्म शास्त्रों की–पुराणों की-रचना बद्रीनाथ से आगे वसोधारा स्थान पर की थी। शरीर और मन की दिव्य शक्तियों को उभारने की योग साधना पातञ्जलि ने रुद्रप्रयाग स्थान पर की थी। याज्ञवल्क्य ने यज्ञ विधान का आविष्कार त्रियुगी नारायण क्षेत्र में किया था। विश्वामित्र ने आद्य शक्ति गायत्री का साक्षात्कार सप्तसरोवर स्थान में किया था। भगीरथ ने गंगा को पृथ्वी पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उतारने की साधना गंगोत्री में भागीरथ शिला पर बैठकर की थी। चरक ने वनौषधियों का अन्वेषण करके आयुर्वेद का आविष्कार केदारनाथ में किया था। जमदग्नि उत्तरकाशी में ब्रह्म विद्या का आरण्यक चलाते थे। नारद ने शब्द ब्रह्म-नाद का प्रत्यक्षीकरण गुप्तकाशी में किया था और दिव्य संगीत के माध्यम के विश्व के कोने-कोने में भक्ति भाव जगाया था। वे निरन्तर प्रव्रज्यारत रहे थे। जब अज्ञान और अनीति से वातावरण विषाक्त हो गया, तो सशक्त मूर्धन्यों का "ब्रेन वाशिंग" सिर उतार लेने जैसा पराक्रम परशुराम ने यमुनोत्री में तप साधना करके और शिव जी से अमोघ कुठार प्राप्त करके सम्पन्न किया था। वशिष्ठ जी ने प्रजाधर्म और राजधर्म का स्वरूप निर्धारित करके दोनों का संतुलन बिठाया था। उनका कार्य क्षेत्र देव-प्रयाग के समीपवर्ती आश्रम में रहा। उन्हीं के पास ढलती आयु में चारों भाइयों समेत राम वानप्रस्थ शिक्षा प्राप्त करने गये थे। आद्य शंकराचार्य ने अपनी तपश्चर्या और साहित्य साधना ज्योतिर्मठ में की थी। पिप्पलाद ने अन्न से मन का निर्माण करने का रहस्य लक्ष्मण झूला के निकट रहकर प्राप्त किये थे। सूतशौनिक की पुराण गाथा का उद्गम ऋषिकेश माना जाता है। भरत की तपोभूमि भी वहीं है। हर की पौड़ी हरिद्वार में राजा हर्षवर्धन ने अपना सर्वस्वदान करके तक्षशिला विश्वविद्यालय का निर्माण एवं संचालन का उत्तरदायित्व अपने कंधों पर उठाया था। महर्षि कणाद ने आत्मिक कायाकल्प की विद्या सप्तसरोवर पर वहाँ आविष्कृत की थी, जहाँ आजकल ब्रह्मवर्चस् है।

बुद्ध के धर्म चक्र प्रवर्तन की—आर्य भट्ट के ज्योतिर्विज्ञान के आविष्कार की-नागार्जुन की रासायनिक प्रयोगशाला हिमालय क्षेत्र में ही थी। च्यवन की अद्भुत तपश्चर्या का क्षेत्र यही है। इसके अतिरिक्त अति पुरातन काल के तथा उसके पश्चात् वर्तमान काल के सभी उच्चस्तरीय ऋषि-मुनि हिमालय क्षेत्र में रहकर दिव्य प्रेरणायें प्राप्त करते और प्रचण्ड आत्मबल अर्जित करते रहे हैं।

पांच सखियों समेत गंगा इसी क्षेत्र में प्रवाहित होती हैं। अनेकानेक दिव्य औषधियाँ इसी क्षेत्र में उत्पन्न होती हैं और अपने प्रभाव से वातावरण में दिव्यता भरती है। देवताओं का निवास पुराणों में सुमेरु पर्वत कहा गया है। वह शिखर इसी क्षेत्र में है। नन्दन वन, शिवलिंग पर्वत के समीप ही मानसरोवर का अवस्थित होना कैलाश पर्वत की स्थिति इसी क्षेत्र में होने का संकेत करता है। सती और पार्वती दोनों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तपश्चर्या यहीं हुई थी। त्रियुगी नारायण में दोनों का ही समय समय पर विवाह हुआ था। दक्ष अपने समय के मूर्धन्य वैज्ञानिक थे। वे कनखल में रहते थे। चाणक्य ने कुछ समय तक हिमालय में रहकर तपश्चर्या की थी। शिव जी का इसी क्षेत्र में स्थाई निवास है। कृष्ण-रुक्मणी समेत बद्रीनारायण में श्रेष्ठ सन्तान के लिए साधना करते रहे। सीता को आश्रय देने वाले और लव-कुश को महान योद्धा बनाने वाले वाल्मीकि इसी क्षेत्र में रहे हैं। शकुन्तला और चक्रवर्ती भरत का पालन-प्रशिक्षण इसी उत्तराखण्ड में हुआ था।

अभी भी हिमालय के उत्तराखण्ड में गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी, केदारनाथ, बद्रीनाथ-में चार धाम हैं। पांच प्रयाग, पाँच काशियाँ, पाँच सरोवर, पाँच गंगाएँ इसी क्षेत्र में अवस्थित हैं। देवता और ऋषि स्थूल या सूक्ष्म शरीर से अभी भी यहाँ विद्यमान हैं। इन कारणों को देखते हुए उत्तराखण्ड क्षेत्र हिमालय का हृदय और आध्यात्मिक शक्ति प्रवाह का ध्रुव केन्द्र माना जाता है। थियोसॉफिकल सोसायटी ने इन दिनों विश्व संचालक शक्तियों की पार्लियामेण्ट इसी को कहा है। पाण्डव सशरीर स्वर्गा-रोहण की योजना बनाकर इसी क्षेत्र में चले आये थे। इसके अतिरिक्त समय-समय पर अन्य तपस्वी इसी क्षेत्र का आश्रय लेते रहे हैं और इस क्षेत्र में बिखरे पड़े मणि-मुक्तकों के जिज्ञासुओं से झोली भरकर कृत-कृत्य होते रहे हैं।

पुरातन काल जैसी ऋषि विभूतियाँ इन दिनों देवात्मा हिमालय की गोदी में आश्रय पा नहीं रही हैं, तो भी पुरातन पूँजी इस क्षेत्र को अभी भी सामर्थ्यवान बनाये हुए है। देवात्मा हिमालय अभी भी एक अतीव शक्ति सम्पन्न एवम् प्रत्यक्ष देवता है।

भारत में विभिन्न स्थानों पर अनेकानेक देवताओं के देवालय हैं। आवश्यकता समझी गई कि देवात्मा हिमालय की आत्मा का आह्वान करके प्राण-प्रतिष्ठा सहित हिमालय का एक दिव्य देवालय बनाया जाय। इस आवश्यकता की पूर्ति शांतिकुञ्ज में अवस्थित हिमालय में की गई है। यह सप्त ऋषियों की वह पुरातन तपोभूमि है, जिसके लिए गंगा ने उनका तप निर्विघ्न चलते देने के लिए अपने आगमन के समय पर सात धारायें बाँट दी थीं। अभी कुछ समय पूर्व सरकार ने भूमि प्राप्त करने के लिये बाँध बना दिया है। इसके कुछ दशक पूर्व ब्रह्मवर्चस् और शान्तिकुञ्ज के दोनों ही स्थानों पर गंगा की धारायें प्रवाहित होती थीं। देवात्मा हिमालय के उत्तराखण्ड

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्षेत्र का देवालय बनाना इसी क्षेत्र में उपयुक्त समझा गया। यह शांतिकुञ्ज के एक विशाल कक्ष में अवस्थित है। उसमें विद्यमान तीर्थों की झाँकी भी इसी में होती है। भाव श्रद्धा वाले दर्शक इस छोटी प्रतिमा में ही समूचे उत्तराखण्ड क्षेत्र का दर्शन भली प्रकार कर सकते हैं।

शरीर के साथ प्राण भी होने चाहिए। दर्शन के साथ गतिविधियाँ भी जुड़ी रहनी चाहिए। शांतिकुञ्ज के प्रयास और कार्यक्रम यही हैं। इस आश्रम में क्या होता है और क्या होने जा रहा है, इस पर गम्भीरतापूर्वक दृष्टिपात किया जाय, तो प्रतीत होगा कि न केवल हिमालय का दृश्यमान शरीर ही यहाँ है, वरन् वे सारी गतिविधियाँ भी चलती हैं, जो पुरातन काल में हिमालयवासी ऋषियों ने अपनायी थीं और जिनका लाभ प्राप्त करके समस्त संसार-समस्त जन समुदाय कृत-कृत्य हुआ था।

महाप्रज्ञा गायत्री के द्रष्टा विश्वामित्र का यहाँ मन्दिर है। हर आश्रमवासी को अनिवार्यतः गायत्री उपासना करनी पड़ती है। बाहर से सैकड़ों साधक निरन्तर आते और गायत्री अनुष्ठान समेत 'समग्र स्वास्थ्य संवर्धन' की साधना करते हैं।

याज्ञवल्क्य के यज्ञ विज्ञान का यहाँ नौ कुण्डी यज्ञशाला में निरन्तर यज्ञ होता है और उसमें सभी साधक भाग लेते हैं। आगन्तुकों को यज्ञ के माध्यम से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक व्याधियों के निवारण की विधि बताई और कराई जाती है।

चरक की वनौषधि शोध को यहाँ आगे बढ़ाया गया है। शांतिकुञ्ज और ब्रह्मवर्चस् में दुर्लभ जड़ी-बूटियाँ लगायी गई हैं और एक साधन सम्पन्न प्रयोगशाला द्वारा उनमें से प्रत्येक का परीक्षण होता रहता है, ताकि उनकी प्रामाणिकता पर कोई अँगुली न उठा सके।

पताञ्जलि और कणाद की योगाभ्यास साधना का यहाँ अभिनव संस्करण देखा जा सकता है। हर साधक का शारीरिक, मानसिक और अन्तः करण परीक्षण कीमती मशीनों और एम० डी०, एम० एस० स्तर के सुयोग्य डाक्टरों द्वारा होता है। साधना तथा उपचार इसी आधार पर चलते हैं। दस-दस दिन के 'समग्र स्वास्थ्य संवर्धन सत्र' इसी प्रयोजन के लिए चलते हैं और उनके द्वारा निरन्तर बड़ी संख्या में आगन्तुक लाभान्वित होते हैं।

व्यास परम्परा के अनुरूप शांतिकुञ्ज में युग साहित्य का सृजन, मुद्रण एवं प्रकाशन क्रम निरन्तर चलता है। आर्ष ग्रन्थों का—वेद, उपनिषद, दर्शन आदि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का—अनुवाद-प्रकाशन पहले हो चुका है। अब जीवन और समाज के हर पक्ष पर प्रकाश डालने वाला सस्ता साहित्य विनिर्मित किया जा रहा है और उनका अनुवाद हर भाषा में हो रहा है।

जमदग्नि परम्परा में जन साधारण को संस्कारवान् बनाने का प्रचलन था। शांतिकुञ्ज में षोडश संस्कार कराने की व्यवस्था है। यहां उपनयन होते हैं, पितरों का श्राद्ध-तर्पण भी होता है, बिना खर्च के विवाह भी बड़ी संख्या में हर साल होते हैं। जन्म दिन और विवाह दिन मनाने भी प्रज्ञा परिजन बड़ी संख्या में यहाँ आते रहते हैं।

परशुराम के अनुरूप विचार-क्रान्ति अभियान को व्यापक बनाया जा रहा है। कुरीतियों, दुष्प्रवृत्तियों, अवाँछनीयताओं, मूढ़मान्यताओं, अनीतियों को जड़मूल से उखाड़ने के लिए लोकमानस को झकझोरा जा रहा है और जो उचित है, उसी को अपनाने के लिए सहमत किया जा रहा है। यह ब्रेन वाशिंग बड़ा ही प्रभावशाली और सफल सिद्ध हो रहा है।

नारद परम्परा में संगीत और प्रवचन परामर्श का युग शिल्पी विद्यालय चलता है और प्रशिक्षित परिव्राजक जीप-टोलियों द्वारा देश भर में हर वर्ष हजारों प्रज्ञा आयोजन सम्पन्न करते हैं।

उद्दालक परम्परा में बालकों का गुरुकुल और अनुसूया परम्परा में महिलाओं का प्रशिक्षण क्रमबद्ध रूप से चलता है और छात्राओं की पुरातन परम्परा को जीवन्त रखा जाता है। छात्रा महिलाएँ और बालिकाएँ ही मिलजुलकर यहाँ के अन्न क्षेत्र का संचालन करती हैं।

बुद्ध परम्परा के अनुरूप यहाँ के कार्यकर्त्ता विदेशों में भी धर्म परम्परा को प्रतिष्ठित एवं अग्रगामी बनाने का प्रयत्न करते है। उनने भारत से बाहर चौहत्तर देशों में मिशन की विचार धारा में—लाखों लोगों को दीक्षित एवं समर्थक बनाया है।

पुरातन काल की समुद्र मंथन योजना के अनुरूप अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय का भारी शोध प्रयास चला है। यह समस्त संसार में पहला और अनोखा प्रयास है। ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान इसी निमित्त बना है, जिसमें लाखों रुपये के शोध-उपकरण एवं बहुमूल्य यन्त्र हैं। इनके द्वारा जो निष्कर्ष निकलते जा रहे हैं,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्हें समुद्र मंथन द्वारा निकली रत्न-राशि के समतुल्य होने का अनुमान लगाया जाए, तो कोई अत्युक्ति न होगी । यज्ञ विज्ञान की—विभिन्न साधनाओं की—परिणति की शोध इस प्रयास के अन्तर्गत अतीव गम्भीरतापूर्वक हो रही है ।

शंकराचार्य परम्परा के अन्तर्गत देश के कोने-कोने पर चार धाम स्थापित किए गये थे । समर्थ गुरु रामदास के प्रयास से महाराष्ट्र के महावीर मन्दिरों के निर्माण की शृंखला चली थी । शांतिकुञ्ज के तत्वाधान में देश के कोने-कोने में चौबीस सौ शक्तिपीठ तथा बारह हजार स्वाध्याय मंडल-प्रज्ञा संस्थानों का निर्माण हुआ है, यह स्थापना भी अभूतपूर्व है ।

सूत-शौनिक परम्परा के अनुसार प्रज्ञा पुराण का नया निर्माण हुआ है । इसके अभी तीन खण्ड छपे हैं, हर वर्ष एक नया खण्ड प्रकाशित करने की योजना है । इसकी कथाएँ इतनी लोक प्रिय हुई हैं, जिनने अन्य सभी कथाओं को पीछे छोड़ दिया है ।

भूतकाल में कितने ही आरण्यक और विश्वविद्यालय धर्म-प्रचारकों को प्रशिक्षित करने के लिए बने थे, अब वह कार्य अपनी सीमित सामर्थ्य के कारण अकेला हरिद्वार का शांतिकुंज कर रहा है । उसमें चौबीस हजार से अधिक प्रज्ञा पुत्र धर्मप्रचार का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं और अपने-अपने क्षेत्रों में युगान्तरीय चेतना का अलख जगाते, आलोक वितरण करते हुए छोटे-बड़े आयोजन निरन्तर करते रहते हैं ।

ऋषि कणाद अपनी आश्रम व्यवस्था खेतों में छूटे हुए अन्न से करते थे । शांतिकुञ्ज गायत्री-तीर्थ की यह व्यवस्था महिलाओं द्वारा एक मुट्ठी अन्न एवं पुरुषों द्वारा दस पैसा नित्य देने के आधार पर एकत्रित हुए राशि से ही चलती है ।

देवात्मा हिमालय के उत्तराखण्ड क्षेत्र की प्रतीक-प्रतिमा रूप में विनिर्मित यह आश्रम अद्भुत एवं अनुपम है । हिमालय के अंचल में पले ऋषियों ने जिन-जिन सत्प्रवृत्तियों को सुविकसित किया था और जो आत्मबल एकत्रित किया था, उसका छोटा नमूना इस आश्रम में पहुँचकर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। वशिष्ठ-अरुन्धती की तरह यहाँ एक ऋषि युग्म का प्रयास इस योजना का सूत्र संचालन करता है । अब तक की प्रगति को देखने-सुनने वाले आश्चर्य चकित रह जाते हैं ।

कमाङ्क २२६ युगान्तर चेतना प्रेस, शांति कुञ्ज हरिद्वार । मूल्य-४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org